प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं उनकी पठन बोध योग्यता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

Prathamik Star ke Drishtibadhit Vidyarthiyon men Shabdik Sampratyay Nirman evam Unaki Pathan Bodh Yogyata ke Madhy Sambandh ka Adhyayan

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

शोध उपाधि समिति (शिक्षाशास्त्र) की बैठक दिनांक 03 अप्रैल 2024 के निर्देशानुसार प्रस्तुत संशोधित शोध प्रस्ताव

सत्र–(2023–24)

प्रस्तुतकर्ता

Nityanand

नित्या नन्द

नामांकन सं0–2300906

शोध पर्यवेक्षक

03/05/2024

प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय

आचार्य

शिक्षाशास्त्र

Forwarded

03.05.2024

निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा

(अग्रसारण करने वाले सक्षम अधिकारी की मुहर एवं दिनांक सहित हस्ताक्षर)

शिक्षा विद्या शाखा

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज पिन–211021

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"Prathamik Star ke Drishtibadhit Vidyarthiyon men Shabdik Sampratyay Nirman evam Unaki Pathan Bodh Yogyata ke Madhy Sambandh ka Adhyayan"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. P.K.Panday and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Research Supervisor

05/06/25

Prof. P. K. Pandey
Faculty of Education

(Signature)

Nityanand

Nitya Nand
En.No.- 2300906

05.06.2025

Prof. P. K. Astalin
(Director School of Education)

05/06/25

Prof. P. K. Pandey
(Secretary of RDC/Director, R&D cell)

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना	2–3
समस्या की उत्पत्ति	4
सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण	4–7
सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा	7–8
अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व	8–9
अनुसन्धान प्रश्न	9
समस्या कथन	9
शोध अध्ययन के उद्देश्य	9–10
शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं	10
अध्ययन की परिसीमाएं	11
प्रस्तावित अध्ययन में सम्मालित प्रमुख शब्दों की कार्यात्मक परिभाषाएँ	11
अनुसन्धान अभिकल्प	12
अनुसन्धान विधि	12
अध्ययन में प्रयुक्त चर	12
न्यादर्श और न्यादर्शन प्रविधि	12
प्रयुक्त अनुसन्धान उपकरण	12–13
समंक संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण प्रविधि	13
अध्ययन की सार्थकता	13
संदर्भ ग्रंथ सूची	14–15

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही शिक्षा सभ्यता का आधार रही है। शिक्षा सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का विकास समुचित दिशा में नहीं हो सकता। शिक्षा वह ज्योतिपुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश से आलोकित करती है। यह मनुष्य के अंदर अभिव्यक्ति अर्थात् गुण, विशेषताएं और क्षमताओं का विकास करती है तथा वातावरण के साथ समायोजन में सहायता करती है। शिक्षा मनुष्य को आत्मविश्वासी एवं स्वार्थहीन बनती है। शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विकास होता है। जिससे वह अपने व्यवहारों में अनुकूलन लाकर अपने जीवन को सफल बनाता है। शिक्षा हर व्यक्ति का विकास करती है और बालक का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली विकास की एक प्रक्रिया है।

इन्हीं विकास प्रक्रिया के क्रम में एक विकास है भाषा का विकास। भाषा का विकास बच्चों में जन्म के कुछ महीनों के बाद प्रारम्भ होने लगता है। बच्चें प्रारम्भ के कुछ वर्षों में अक्षर से शब्द तथा शब्द से वाक्य बोलना प्रारम्भ कर देते है। भाषा का विकास कुछ बच्चों में जल्दी, कुछ में समान्य तो कुछ में देरी से होती है। बच्चें शब्दों को बोलने के साथ–साथ उनके अर्थों को भी समझने लगते हैं। वे उन शब्दों से जुड़े अर्थों का मूर्त या अमूर्त सम्प्रत्यय का निर्माण करते हैं। उनके अंदर किसी भी वस्तु के प्रति शाब्दिक सम्प्रत्यय का निर्माण होने लगता है। वे किसी वस्तु, चित्र, प्रतिमा, आवाज एवं भाव–भंगिमा को पहचानने लगते हैं। वे दो एक जैसी दिखने वाले गाय एवं बैल में अन्तर करने लगते हैं। वे एक जैसे दिखने वाले कोयल एवं कौवे के आवाज में अन्तर करने लगते हैं। उनमें गाय–बैल के प्रति तथा कौवा–कोयल के आवाजों के प्रति अलग–अलग सम्प्रत्यय का निर्माण होता है।

प्रकृति के नियम के अनुसार कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं होते अर्थात् दो व्यक्तियों में व्यक्तिगत भिन्नता दृष्टिगत होती है। विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने वाले सभी विद्यार्थी भी एक समान क्षमता वाले नहीं होतें। कुछ विद्यार्थी सामान्य तो कुछ विद्यार्थी विशिष्ट होते है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में विशिष्ट होता है। जब आप विशिष्ट बालक शब्द को सुनते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसा विद्यार्थी जो विद्यार्थियों के सामान्य

समूह से अलग विशिष्टता रखता है। इनकी विशेषता या तो सामान्य विद्यार्थियों से अधिक होता है या सामान्य विद्यार्थियों से कम होता है। इन विद्यार्थियों के विशिष्टता के आधार पर ही इनको प्रतिभाशील बालक, सृजनशील बालक, मानसिक दुर्बल बालक, पिछड़ा बालक, समस्या ग्रस्त बालक, कुसमायोजित बालक एवं दिव्यांग बालक की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। यह सभी विद्यार्थी, विशिष्ट विद्यार्थियों की श्रेणी में आते है। इन विद्यार्थियों की श्रेणीयों में एक श्रेणी दिव्यांग विद्यार्थियों का भी है। यह दिव्यांग विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों के भांति ही होते हैं। परंतु इनमें किसी एक या एक से अधिक अंग के दिव्यांगता के कारण इनका विकास एवं अधिगम प्रभावित हो जाता है। ऐसे ही दिव्यांग विद्यार्थियों की श्रेणी में एक वर्ग दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का भी है। यह दृष्टिबाधित विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों के जैसे ही होते है। बस इनमें केवल दृष्टि क्षमता नहीं होती। यदि इनके सीखने के विधि में इनकी आवश्यकताओं के अनुसार थोड़ा परिवर्तन कर दिया जाए तो यह भी सामान्या विद्यार्थियों की भांति ही सीख सकते हैं एवं शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी सीखने के लिए अधिक उत्साहित रहते हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थी भाषा के दोषी नहीं होतें है क्योंकि वह ठीक प्रकार से सुन और बोल सकते हैं। ये विद्यार्थी भाषा के माध्यम से अपनी बात अपने माता–पिता तथा साथियों से कह सकते हैं। इनमें संप्रेषण की क्षमता होती है। यह सामान्य विद्यार्थियों की भाँति ही भाषा को सुनकर सीखते है लेकिन लिखने सम्बन्धी भाषा का विकास भिन्न तरीके से होता है। यह अपने विचारों को केवल शब्दो से ही व्यक्त नहीं करते बल्की इंद्रियों के माध्यम से भी व्यक्त करते है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी सुनकर ही शब्दों का चयन करते हैं क्योंकि इनकी दृष्टि इंद्रिय क्रियाशील नहीं होती हैं। उनके अधिकतम ज्ञान एवं जानकारीयाँ, श्रवण एवं स्पर्श इंद्रिय पर आधारित होती है। उनमें समान्यतः कुछ वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण सही से नहीं हो पाता। इनका प्रत्यक्षीकरण सुनने एवं स्पर्श तक ही सीमित रह है। वह तथ्यों को भाषा के माध्यम से प्रकट करते है। इनकी शाब्दिक अभिव्यक्ति आंतरिक नहीं होती तथा इनकी अनुभव पूर्ण नहीं होते हैं। सम्प्रत्यय का निर्माण संवेदनाओं तथा प्रत्यक्षीकरण की क्रियाओं के द्वारा प्राप्त अनुभूतियों से होता है। इन दृष्टिबाधित विद्यार्थीयों में सम्प्रत्यय निर्माण निरीक्षण, विश्लेषण, तुलनात्मकता, सामान्यीकरण एवं नामांकन के द्वारा ही होता है।

समस्या की उत्पत्ति

विद्यालय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। विद्यालय में भिन्न भिन्न क्षमता वाले छात्र एक समूह में रहते हैं। जिस प्रकार समाज में सामान्य एवं विशिष्ट व्यक्ति पाए जाते हैं उसी प्रकार कक्षा में भी सामान्य एवं विशिष्ट विद्यार्थियों के समूह का निर्माण होता है। इन विशिष्ट विद्यार्थी की समूह में शारीरिक अक्षमता वाले विद्यार्थी भी आते है। जिन्हें दिव्यांग विद्यार्थी कहते है। इन्हीं दिव्यांग विद्यार्थी की समूह में एक समूह दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का है। ये दिव्यांग विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों की भांति ही सीखते है। इनमें सम्प्रत्यय का निर्माण काफी हद तक सामान्य विद्यार्थियों के जैसे ही होता है। इनके दृष्टि इंद्रियाँ न होने कारण इनका सम्प्रत्यय निर्माण श्रवण,स्पर्श एवं अन्य इंद्रियों के द्वारा होता है। इनमें बोलने तथा पढ़ने का विकास भी सामान्य विद्यार्थियों के जैसा ही होता है लेकिन लिखने का विकास ब्रेल के माध्यम से होता है। प्रस्तावित शोध के लिए शोधकर्ता ने साहित्यिक पुनरावलोकन किया तथा अध्ययन करने के पश्चात् यह पाया की वाराणसी शहर के सामान्य विद्यार्थियों और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के वाचन बोध योग्यता समान है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पठन बोध योग्यता पर शोधकार्य हुए हैं, इनके अलावा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सम्प्रत्यय निर्माण भी पर शोधकार्य हुए हैं परंतु शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण पर शोधकार्य बहुत कम हुए है। दृष्टिबाधित शिक्षार्थियों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण, उनकी पठन बोध योग्यता में किस प्रकार का सम्बन्ध है। इस बात का उत्तर मिलना अभी बाकी है। अतः शोधार्थी ने महसूस किया की उपर्युक्त चरों के सम्बन्ध में इस बात का पता लगाया जाय की दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण का उनकी पठन बोध योग्यता में किस प्रकार का सम्बन्ध है। इन सभी प्रश्नों के सार्थक, तर्कसंगत एवं वास्तविक उत्तर जानने के लिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन का चयन किया।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

अजय कुमार एवं किशोर एच0 माने(2017) ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एक लघु शोध प्रबंध किया, जिसका शीर्षक था–ए स्टडी आफ वर्बल कॉन्सेप्ट फॉरमेशन आफ चिल्ड्रन विथ विजुअल इंपेयरमेंट इन वाराणसी सिटी। अपने अध्ययन में पाया कि है। सामान्य

बालक एवं दृष्टिबाधित बालक के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण में सार्थक कोई अन्तर नहीं है। अतः सामान्य बालक एवं दृष्टिबाधित बालकों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण का प्रभाव उनके अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता।

असाली और स्मदी(2015) ने दृष्टिबाधित विद्यार्थियों कि पठन बोध योग्यता पर एक शोध किया जिसमें कहा की पढ़ना एक बुनियादी ज्ञान है इसलिए शिक्षार्थियों को अपनी पढ़ने की समझ की क्षमता को बढ़ाना चाहिए क्योंकि समझ शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया का मूल है। पठन का अर्थ लिखी हुई सामग्री को पढ़ते हुए उसका अर्थ ग्रहण करने, उसके पश्चात् उस पर अपना मंतव्य (सोच, विचार) स्थिर करने और फिर उसके अनुसार व्यवहार करने से है। अर्थात् अर्थ एवं भाव को ध्यान में रखकर किसी लिखित भाषा को पढ़ना ही पठन कौशल कहलाता है। इनके अनुसार पठन के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें शामिल हैं: ध्वनि के प्रतीक को देखकर पहचानना, वर्गों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना, शब्दों को सार्थक इकाइयों में बाँटकर पढ़ना, पठित सामग्री के विचारों को समझाना, पठित सामग्री पर अपना मंतव्य स्थिर करना आदि।

क्लार्क विश्के और स्टोनर(2009) ने वर्तनी कौशल की जांच का 20 छात्रों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि 20 छात्रों की लिखित रचनाएं जो ब्रेल पढ़ते हैं और आगे अभिव्यक्ति करते हैं। इन छात्रों के वर्तनी कौशल देखने वाले छात्रों के समान है।

एस0 सान्याल(2008) ने विद्यालय पूर्व तथा प्रारंभिक कक्षा के दृष्टिबाधित बालकों पर अध्ययन किया तथा दृष्टिबाधित बालकों के सम्प्रत्यय के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि सभी बालकों के लिए संकल्पना (सम्प्रत्यय) का विकास अधिकतर ठोस अनुभव पर आधारित है। अन्य बालकों के अपेक्षा दृष्टिबाधित बालकों के सम्प्रत्यय विकास के लिए ठोस अनुभव की अपेक्षा सम्प्रत्यय के विकास की अधिक आवश्यकता होती है। विद्यालय पूर्व तथा प्रारंभिक कक्षा के दृष्टिबाधित बालकों पर किए गए अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दृष्टिबाधित बालकों में दृष्टिबाधिता के कारण सम्प्रत्यय देर से बनता है।

ए0 एस0 राय(2007) ने अपने एक शोध में दृष्टिबाधित बालकों के भाषा विकास के सम्बन्धमें सम्प्रत्यय निर्माण कि भूमिका पर अध्ययन किया। अध्ययन के लिए कक्षा 7 के विभिन्न आयु के 400 छात्रों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया। सूचनाओं के विश्लेषण

के फलस्वरूप यह परिणाम निकला कि कक्षा 7 के भिन्न–भिन्न आयु के छात्रों के विज्ञान सम्प्रत्यय निर्माण का संज्ञानात्मक विकास और उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ए० जुल्का(2006) ने दृष्टिबाधित बालकों के संज्ञानात्मक विकास और सम्प्रत्यय प्राप्ति विषय पर एक अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि संज्ञानात्मक विकास और सम्प्रत्यय प्राप्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि प्रायः देखा जाता है की ऐसे दृष्टिबाधित छात्र जिनका संज्ञानात्मक विकास अन्य दृष्टिबाधित बालकों की अपेक्षा कम नहीं है। अतः अध्ययन से परिणामों को देखते हुए निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के भाषा विकास के दौरान संज्ञानात्मक पहलुओं पर बल ना देकर उनके सम्प्रत्यय, वर्गीकरण, आकारों के सम्प्रत्यय आदि पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

कनक लाल(2005) ने अपने एक शोधपत्र में जिसका शीर्षक दृष्टिबाधित बालकों में भाषायी सम्प्रत्यय का विकास था। अपने अध्ययन में पाया कि दृष्टिबाधित बालकों के लिए श्रवण कौशल का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। दृष्टिबाधित बालक की विभिन्न संकल्पना (सम्प्रत्यय) भी श्रवण कौशल द्वारा विकसित होते हैं। शरीर के प्रति जागरूकता, वस्तु के प्रति जागरूकता, समय व दूरी के प्रति जागरूकता समानताओं और भिन्नताओं के सम्प्रत्यय, वस्तु के मिलान करने का सम्प्रत्यय, वर्गीकरण के सम्प्रत्यय, आकारों के सम्प्रत्यय आदि सभी सम्प्रत्ययो में दृष्टिबाधित बालक, श्रवण कौशल का सहारा लेता है।

गिलोन और यंग(2002) ने ध्वनि जागरूकता कौशल एवं पठन कौशल की तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें न्यादर्श के रूप में न्यूजीलैंड के बच्चे 7 से 15 वर्ष की आयु के 200 बच्चे लिए थे, जो ब्रेल का उपयोग कर रहे थे। उनके पढ़ने का माध्यम उन पर दृष्टि रखने वाले बच्चों के नियंत्रण समूह के साथ कालानुक्रमिक रूप से 3 साल छोटे थे, लेकिन एक ही पढ़ने की उम्र के थे। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि जिन बच्चों को ब्रेल पढ़ने में कठिनाई हुई,उन्हें भी देरी हुई धनात्मक जागरूकता के अपने विकास में,शक्ति का प्रदर्शन और कमजोर बच्चे जो देखने वाले के समान थे।

ड्यूक और पियर्सन(2001) ने अपने एक अध्ययन में बताया कि पठन का अर्थ लिखी हुई सामग्री को पढ़ते हुए उसका अर्थ ग्रहण करने, उसके पश्चात् उस पर अपना मंतव्य (सोच, विचार) स्थिर करने और फिर उसके अनुसार व्यवहार करने से है। अर्थात् अर्थ एवं भाव

को ध्यान में रखकर किसी लिखित भाषा को पढ़ना ही पठन कौशल कहलाता है। सूचनाओं के विश्लेषण के पश्चात यह परिणाम प्राप्त किया कि अच्छे पाठक बनने के लिए, शिक्षार्थियों को जो कुछ पढ़ा जा रहा है उसके बारे भविष्यवाणी करने में सक्षम होना चाहिए।

एम0 माथुर तथा ए0 एस0 सचान(1998) ने दृष्टिबाधित बालकों के भाषा विकास तथा उनके सम्प्रत्यय निर्माण, पर्यावरण से सूचना प्राप्त करने के ढंग में सम्बन्ध का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में पाया की दृष्टिबाधित बच्चों को पर्यावरण से सूचना प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से उनके श्रवण कौशल को विकसित किया जाए। विभिन्न ध्वनियों को सुनने से दृष्टिबाधित बच्चों में शब्द शक्ति, शब्द ज्ञानकोष और उनके सुननें ,बोलनें ,पढ़नें एवं लिखनें के कौशलों में विकास होती है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दृष्टिबाधित बालकों के भाषा विकाश तथा उनके सम्प्रत्यय निर्माण, पर्यावरण से सूचना प्राप्त करने के ढंग में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

मैक डेविड तथा हवार्ट(1997) ने भाषा अधिगम पर प्रतीकों व सम्प्रत्यय का प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें उन्होने भाषा को प्रतीको तथा सम्प्रत्यय के संग्रह के रूप में व्यक्त किया। उनके अनुसार भाषा एक सामाजिक परंपराओं का संस्थान है जो एक प्रतीको के सेट तथा सम्प्रत्ययों के समूह में विशेष प्रकार से सम्बन्धों का वर्णन करती है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा अधिगम पर प्रतीकों एवं सम्प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह जानने में सहायता प्राप्त हुई कि प्रस्तावित शोध अध्ययन के क्षेत्र में पहले से क्या किया जा चुका है एवं प्रस्तावित शोध अध्ययन के क्षेत्र में वर्तमान में क्या करने की आवश्यकता है। जिससे शोध अध्ययन के उद्देश्यों की विद्यार्थी, शिक्षक, व्यक्ति एवं समाज के लिये प्रासंगिकता सिद्ध हो सके। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के माध्यम से ज्ञात हुआ कि शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण के क्षेत्र में ना के बराबर शोधकार्य हुये हैं और जो कुछ शोधकार्य हुये हैं वो केवल विदेशों में हुए है तथा पठन बोध योग्यता के क्षेत्र में भी बहुत कम शोधकार्य हुये हैं और जो शोधकार्य हुये हैं उनमें से कुछ अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हुए है। अजय कुमार एवं किशोर एच0

माने(2017) ने अपने एक अध्ययन– ए स्टडी आफ वर्बल कॉन्सेप्ट फॉरमेशन आफ चिल्ड्रन विथ विजुअल इंपेयरमेंट इन वाराणसी सिटी में पाया कि– सामान्य बालक एवं दृष्टिबाधित बालक के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण में सार्थक कोई अन्तर नहीं है। एस0 सान्याल(2008) ने विद्यालय पूर्व तथा प्रारंभिक कक्षा के दृष्टिबाधित बालकों पर अध्ययन किया और पाया कि दृष्टिबाधित बालकों में दृष्टिबाधिता के कारण सम्प्रत्यय देर से बनता है। एम0 माथुर तथा ए0 एस0 सचान(1998) ने दृष्टिबाधित बालकों के भाषा विकास तथा उनके सम्प्रत्यय निर्माण, पर्यावरण से सूचना प्राप्त करने के ढंग में सम्बन्ध का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में पाया कि दृष्टिबाधित बालकों के भाषा विकास तथा उनके सम्प्रत्यय निर्माण, पर्यावरण से सूचना प्राप्त करने के ढंग में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। मैक डेविड तथा हवार्ट(1997) ने भाषा अधिगम पर प्रतीकों व सम्प्रत्यय का प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि भाषा अधिगम पर प्रतीकों एवं सम्प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था।

अतः उपर्युक्त शोध अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रस्तावित शोध के अध्ययन की अति आवश्यकता है, जिससे प्रस्तावित शोध के महत्वपूर्ण चरों एवं उनसे प्राप्त होने वाले परिणामों पर अधिक से अधिक प्रकाश डाला जा सके एवं विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिये उपयोगी बनाया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक कल्याणकारी एवं प्रजातांत्रिक समाज में शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्ति का अधिकतम संभावित विकास करना है ताकि व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुरूप मानव जीवन के प्रति मौलिक योगदान कर सके। ऐसे में प्रत्येक बालक चाहे वह किसी भी प्रकार के बौद्धिक या शारीरिक अक्षमता से युक्त हो उन्हे शिक्षा का पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विषय में उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करते हुए शोधकर्ता ने पाया की दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के स्थानिक अवधारणा प्राप्ति, आत्म अवधारणा, अवधारणा निर्माण प्रक्रिया एवं सम्प्रत्यय निर्माण पर कुछ कार्य तो हुए है लेकिन शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण पर ना के बराबर कार्य हुए है साथ ही पठन बोध एवं पठन बोध योग्यता पर भी शोधकार्य हुए है लेकिन शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता दोनों पर एक साथ कार्य नहीं हुए है। सम्बन्धित साहित्य अवलोकन के दौरान शोधकर्ता के मन में ये

विचार आया की दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सम्प्रत्यय निर्माण, सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा भिन्न होता है तथा इनके पढ़ने–लिखने के तौर–तरीको में भी भिन्नता होती है। तो शोधकर्ता के मस्तिष्क में ये प्रश्न आया की क्या जिन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण अच्छा है, उनका पठन बोध योग्यता भी अच्छा है या फिर जिन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का पठन बोध योग्यता अच्छा है तो क्या उनका शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण भी अच्छा है ? क्या इन दोनों चारों के मध्य आपस में कोई सम्बन्ध है ? इन्हीं सब प्रश्नों का उत्तर जानना ही प्रस्तुत शोध विषय की आवश्यकता है। अतः प्रस्तावित शोध का अध्ययन करना दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

अनुसन्धान प्रश्न

- क्या जन्म से अथवा जन्म के बाद दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के मध्य शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण में सम्बन्ध है ?
- क्या जन्म से अथवा जन्म के बाद दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के मध्य पठन बोध योग्यता में सम्बन्ध है ?
- क्या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं उनकी पठन बोध योग्यता के मध्य सम्बन्ध है ?

समस्या कथन– अनुसंधान प्रश्नों के समाधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध हेतु समस्या को निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है–

"प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं उनकी पठन बोध योग्यता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययनों के आधार पर निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है।

- प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पठन बोध योग्यता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के जन्म से पूर्ण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के जन्म के बाद पूर्ण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के जन्म से आंशिक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के जन्म के बाद आंशिक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तावित शोधकार्य में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता के द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

- प्राथमिक स्तर के जन्म से पूर्ण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
- प्राथमिक स्तर के जन्म के बाद पूर्ण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
- प्राथमिक स्तर के जन्म से आंशिक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
- प्राथमिक स्तर के जन्म के बाद आंशिक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं पठन बोध योग्यता के के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

अध्ययन की परिसीमाएं

- प्रस्तावित शोध केवल वाराणसी एव प्रयागराज मण्डल तक ही सीमित रहेगा ।
- प्रस्तावित शोध अध्ययन में केवल प्राथमिक स्तर के कक्षा–5 के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया जाएगा ।

प्रस्तावित अध्ययन में सम्मालित प्रमुख शब्दों की कार्यात्मक परिभाषाएँ

शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण–इस प्रस्तावित शोध में शाब्दिक संप्रत्य निर्माण से तात्पर्य किसी विद्यार्थी के किसी शब्दों के प्रति अवधारणा ग्रहण करने से है। यहाँ विद्यार्थियों को शब्द समूहों में से एक भिन्न शब्द के अवधारणा को समझने और उसमें अन्तर करते हुए प्रश्नों का सही उत्तर देने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

पठन बोध योग्यता–इस प्रस्तावित शोध में पठन बोध योग्यता से तात्पर्य किसी भी विद्यार्थी के पढ़ने और समझने की क्षमता से है। यहाँ विद्यार्थियों को अपरिचित अनुच्छेदों के छोटे और लम्बे टुकड़ों को समझने और बहुविकल्पीय प्रश्नों का सही उत्तर देने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

पूर्ण दृष्टिबाधित बच्चे–प्रस्तावित शोध में पूर्ण दृष्टिबाधित बच्चे से तात्पर्य उन सभी बच्चों से हैं जो पूरी तरह से अंधे हैं अथवा जन्म से/जन्म के बाद दृष्टि खो चुके हैं या प्रकाश की सीमित धारणा रखते हैं। जिनकी शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ब्रेल या श्रवण प्रणाली (श्रवन टेप और रिकार्ड) का प्रयोग करना पड़ता है।

आंशिक दृष्टिबाधित बच्चे–प्रस्तावित शोध में आंशिक दृष्टिबाधित बच्चे से तात्पर्य उन सभी बच्चों से हैं जो आंशिक रूप से अंधे हैं अथवा जन्म से/जन्म के बाद उनमें आंशिक रूप से दृष्टि शेष हैं। ये अपने शैक्षिक उद्देश्यों के प्राप्ति लिए आवर्धक उपकरण एवं बड़े छापे की पुस्तकों का प्रयोग करते है। इनकी दृष्टि सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थी के बीच में होती है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर– सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का तात्पर्य किसी उपयुक्त मानकीकरण परीक्षण द्वारा मापे जाने वाले सामाजिक एवं आर्थिक स्तर से है।

अनुसन्धान अभिकल्प

शोध अभिकल्प किसी भी शोध की एक ऐसी रूपरेखा होती है जो न केवल किए जाने वाले शोध अध्ययन को व्यवस्थित बनाकर उसे सही दिशा प्रदान करती है बल्कि अध्ययन से संबन्धित विविध दिशाओं पर नियंत्रण बनाए रखने में शोधकर्ता की सहायता भी करती है। अनुसन्धान के प्रारूप का निर्माण इस दृष्टि से भी अति आवश्यक है कि इसके माध्यम से किसी भी शोध कार्य के विभिन्न पक्षों तथा उसकी वास्तविक प्राकृतिक को सहजता पूर्वक ज्ञात किया जा सके।

अनुसन्धान विधि

प्रस्तावित शोध में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एवं उनकी पठन बोध योग्यता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना है। जो एक प्रकार का सहसम्बन्धात्मक शोध अध्ययन है। शोधकर्ता ने शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया और पाया की प्रस्तावित शोध में वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन में प्रयुक्त चर—शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण, पठन बोध योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग

जीवसंख्या और न्यादर्श

प्रस्तावित शोध में वाराणसी एवं प्रयागराज मण्डल में स्थित विशेष विद्यालयों के कक्षा–5 के विद्यार्थियों को जीवसंख्या के रूप में पहचान किया गया है। जिसमें असम्भावित प्रतिदर्श के उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करके समस्त विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

प्रयुक्त अनुसन्धान उपकरण

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य, जनसंख्या की प्रकृति व आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा–

1. शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण के लिए शोधकर्ता द्वारा ब्रेल लिपि में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।
2. पठन बोध योग्यता के लिए शोधकर्ता द्वारा ब्रेल लिपि में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।

समंक संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण प्रविधि

प्रस्तावित शोध में समंक संकलन के लिए शोधकर्ता के द्वारा निर्धारित विशेष विद्यालयों मे जाकर समंक संकलन किया जाएगा एवं विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन की सार्थकता

सामान्य विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण के अलग अलग तरीके होते हैं। लेकिन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण पूर्णतः शाब्दिक तथा स्पर्श माध्यम पर ही निर्भर करता है। इसलिए दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण एक महत्वपूर्ण शोध का विषय बन जाता है। शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण की क्षमता दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पठन बोध योग्यता को प्रभावित करती है। विद्यार्थियों के सही शब्दों का चयन, उनका निर्माण एवं उनके सार्थक इकाइयों को समझ कर उनकी सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास एवं सम्प्रत्यय निर्माण के सुधारात्मक कार्य को करने में इस अध्ययन की सार्थकता प्रकट होती है। प्रस्तावित शोध समस्या के अध्ययन के उपरान्त दृष्टिबाधिता के क्षेत्र में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण में सुधारात्मक कार्य किया जा सकता है, साथ ही साथ उन विद्यार्थियों के पठन बोध योग्यता में वृद्धि के लिए सुधारात्मक कार्य भी किए जा सकता। प्रस्तावित शोध के परिणाम विद्यार्थियों के भाषायी विकास को गति देने में मदद करेगा एवं विशेष शिक्षक को विद्यार्थियों के शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया को समझने में भी मदद करेगा। प्रस्तावित शोध के निष्कर्ष इस प्रश्न के भी उत्तर देंगे की विद्यार्थियों में शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण के लिए कितना सुधारात्मक शैक्षिक कार्य की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

कुमार,ए०&माने,के०एच०(2017),ए स्टडी आफ वर्बल कॉन्सेप्ट फॉरमेशन आफ चिल्ड्रन विथ विजुअल इंपेयरमेंट इन वाराणसी सिटी, अनपब्लिस्ड पी०जी०डीजर्टेशन, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

जुल्का,ए०(2006),दृष्टि बाधित बालकों के संज्ञानात्मक विकास और सम्प्रत्यय प्राप्ति, नई दिल्ली,डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस

माथुर,एम०&सचान ,ए०एस०(1998) वाक एवं भाषा क्षति वाले बच्चों का शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलन, नई दिल्ली,विकास पब्लिशिंग हाउस

राय,ए०एस०(2007),दृष्टि बाधित बालकों के भाषा विकास के सम्बन्धमें सम्प्रत्यय निर्माण कि भूमिका,डॉ०शकुंतला मिश्रा पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

लाल,कनक(2005),दृष्टिबाधित बालकों में भाषायी सम्प्रत्यय का विकास, दृष्टिहीनार्थ शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र,नई दिल्ली

गुप्ता,एस.पी.(2016),उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,शारदा पब्लिकेशन,प्रयागराज

सान्याल,एस०(2008),विद्यालय पूर्व तथा प्रारंभिक कक्षा के दृष्टिबाधित बालकों मध्य शाब्दिक सम्प्रत्यय निर्माण का अध्ययन,दुर्गाबाई देशमुख विशेष शिक्षा महाविद्यालय,दिल्ली

एस्सले, आई०आर० & स्मदी, ओ०ए० (2015). यूजिंग ब्लूम्स टेक्सोनोमी टु इवैल्यूएशन दी काग्निटिव लेवल्स ऑफ मास्टर क्लास क्वेस्चन्स.कैनेडियन सेंटर ऑफ साइंस एण्ड एजुकेशन, 100–101.

चैपमैन, ई०के० (1978)–विजुवली हैण्डीकैप्ड चिल्ड्रेन एण्ड यंग प्युपल, रूटलेज एण्ड केगनपॉल, लंदन।

विस्च्के, सी० & स्टोनर (2009). इम्प्रूविंग स्पेलिंग स्किल्स फॉर ब्लाइण्ड लैंग्वेज लर्नर्स–ओर्थोग्राफिक फीडबैक इन एन ऑडिटरी वोकैबलरी ट्रेनर. सीएसईडीयू 2009– II इण्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन कम्प्युटर सपोर्टेड एजूकेशन, प्रोसीडिंग्स. 501–506.

ड्यूक, एन० के० & पियर्सन, पी० डी०(2001).इफेक्टिव प्रैक्टिसेज फॉर डेवलपिंग रीडिंग कम्प्रीहेंशन. *जर्नल्स ऑफ एजुकेशन, 189, 107–122.*

गिलॉन, जी०टी०, & यंग, ए०ए० (2002). दी फोनोलॉजिकल–अवेयरनेस स्किल्स ऑफ चिल्ड्रन हू आर ब्लाइण्ड. *जर्नल ऑफ विजुअल इंपेयरमेंट & ब्लाइंडनेस, 96(1), 38–49.*

जुलियाना (2018). दी कम्प्रेरेटिव इम्पैक्टस ऑफ यूजिंग लैक्सिकल ग्लॉसिंग एण्ड इंटरफ्रेन्स स्ट्रैटेजि ऑन स्टूडेन्टस' रीडिंग कम्प्रीहेंशन एबिलिटी यूजिंग जिगसा 1 टेक्निक्स. *एक्यूटी: जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज पेडागॉजी, लिट्रेचर एण्ड कल्चर वॉल्यूम 2 नंबर 2 2017.*

मैकडेविड और हॉवर्ड (1997). दी रोल ऑफ सिम्बल्स इन दी मेंनस्ट्रीम टू एक्सेस लिट्रेसी. *जनरल ऑफ एसेस्टिव टेक्नोलॉजि, 1.15–21.10.1108/17549450200700004.*

पाण्डेय, एस० (2012). ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ वर्बलिज्म इन नॉरेटिव लैंग्वेज ऑफ विजुअल इंपेयर्ड और साइटेड चिल्ड्रेन ऑफ वाराणसी सिटी अनपब्लिस्ड पी०जी० डिजर्टेशन फैकल्टी ऑफ एजूकेशन बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी।

स्कोल, जी०टी० (ईडी) 1988–फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन फॉर ब्लाइंड एण्ड विजुअली हैंडिकैप्ड चिल्ड्रेन एण्ड यूथ, थिअरी एण्ड प्रैक्टिस,एएफबी, न्यूयॉर्क।

उस्नियाह एण्ड लस्टयांटी (2017). इम्प्रूविंग इंग्लिश रीडिंग कम्प्रीहेंशन एबिलिटी थ्रू सर्वे, क्वेश्चन्स, रीड, रिकॉर्ड, रिसाइट, रिव्यू स्ट्रेटजी(एस०क्यू०4आर०). इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग।

नंद, जी०के० एट ऑल (2023). इंट्रोडक्शन टु साइकोलॉजी ऑफ डिसेबिल्टी, नीलकमल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

शर्मा, पी०एन० & थापा कविता (2023). हाउ टू डील एण्ड टीच चिल्ड्रेन विथ स्पेशल नीड्स, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

मंगल, एस०के० (2016). एडवांस्ड एजुकेशन साइकोलॉजी, पीएचआई लर्निंग.नई दिल्ली।

फिशर, एच० डगलस, एट ऑल (2019). कॉन्सेप्ट फॉरमेशनः नॉलेज एण्ड एक्सपीरियंस इन अनसुपरवाइस्ड लर्निंग, मॉर्गन कॉफमैन पब्लिशर्स, यूनाइटेड स्टेट।

श्वानेंफ्लुगेल, जे० पाउल एट ऑल (2015). दी साइकोलॉजी ऑफ रीडिंग: थिअरी एण्ड एप्लीकेशन, गिलफोर्ड पब्लिकेशन्स, यूनाइटेड किंगडम।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Nitya Nand
Title	Prathamik Star ke Drishtibadhit Vidyarthiyon me Shabdik Sampratyay Nir man evam Unaki Pathan bodh Yogyata ke madhya Sambandh ka Adhyayan
Paper/Submission ID	3608601
Submitted by	pkpuprtou@rediffmail.com
Submission Date	2025-05-13 14:47:47
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File